अध्याय- पंचम
शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय- पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका

5.2 अध्ययन के उद्देश्य

5.3 परिकल्पनाएँ

5.4 निष्कर्ष

5.5 सुझाव

5.5.1 प्राथमिक शाला में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को सुझाव

5.5.2 प्राथमिक शाला के शिक्षको को सुझाव

5.6 भावी शोध हेतु सुझाव

5.7 शैक्षिक उपयोग

अध्याय- पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका

राष्ट्र की उन्नति अनके घटकों पर निर्भर करती हैं। इन घटकों में शिक्षा का अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसी कारण शिक्षा उद्देश्यपरक और उपयोगी होना आवश्यक होता है तथा समयानुसार उसमें परिर्वतन आवश्यक होता हैं।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। बालक के सर्वांगीण विकास में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण हैं। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा हैं। मातृभाषा के साथ-साथ इस भाषा का ज्ञान जरूरी हैं। यही कारण है कि समूचे भारत में अध्ययन-अध्यापन में इसका समावेश किया गया है फिर भी हिन्दी भाषी क्षेत्रों की तुलना में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भाषा के संदर्भ में बच्चों को ज्यादा कठिनाई होती हैं। जितनी सरलता से अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं उतनी सरलता से हिन्दी भाषा का प्रयोग नहीं कर पाते।

प्रस्तुत शोधकार्य के अंतर्गत लेखन क्षमता को ध्यान में रखकर कार्य किया गया। विद्यार्थियों में लेखन क्षमता का विकास करना शिक्षक का महत्वपूर्ण दायित्व हैं। कक्षा में कुछ विद्यार्थियों को लेखन के दौरान कोई कठिनाई नहीं होती हैं क्योंकि वे धारा प्रवाह में लिखने में सक्षम होते हैं किन्तु कुछ औसत दर्जे के होते हैं जिनमें शिक्षक के थोड़े प्रयास से उन्हें लेखन में दक्ष बनाया जा सकता हैं।

विद्यार्थियों में लेखन क्षमता को विकसित करने एवं लेखन में होनेवाली अशुद्धियों को जानने के लिए लेखन परीक्षण आवश्यक हैं। अतः इस दृष्टि से लेखन की अशुद्धियों के अध्ययन का महत्व अधिक बढ़ जाता हैं। प्राथमिक स्तर पर इन अशुद्धियों का निराकरण अति आवश्यक हैं।

5.2 उद्देश्य

1. कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में लेखन की क्षमता में कमजोरियों का अध्ययन करना।
2. उपलब्धि परीक्षण एवं क्षमता परीक्षण के बीच संबंध का अध्ययन करना।
3. उपलब्धि परीक्षण में क्षमता की कमजोरियों में छात्र एवं छात्राओं के बीच अंतर का अध्ययन करना।
4. क्षमता परीक्षण में क्षमता की कमजोरियों में छात्र एवं छात्राओं के बीच अंतर का अध्ययन करना।
5. कक्षा सातवी में हिन्दी भाषा में लेखन की क्षमता में कितने विद्य— निम्न स्तर पर है और कितने विद्यार्थी उच्च स्तर पर है उसका अध्ययन करना।

5.3 परिकल्पनाएँ

1. उपलब्धि परीक्षण एंव क्षमता परीक्षण में कोई सार्थक संबंध नहीं हैं।
2. उपलब्धि परीक्षण में लेखन क्षमता की कमजोरियों में छात्र एवं छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
3. क्षमता परीक्षण के लेखन क्षमता की कमजोरियों में छात्र एवं छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

5.4 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा परिकल्पनाओं के विश्लेषण, व्याख्या करने के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- उपलब्धि परीक्षण एवं क्षमता परीक्षण में सार्थक धनात्मक संबंध पाया गया।
- उपलब्धि परीक्षण में लेखन क्षमता की कमजोरियों में छात्र एवं छात्राओं के बीच सार्थक अंतर पाया गया।
- क्षमता परीक्षण में लेखन क्षमता की कमजोरियों में छात्र एवं छात्राओं के बीच सार्थक अंतर पाया गया।

5.5 सुझाव

5.5.1 प्राथमिक शाला में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को सुझाव

- अध्ययन में आनेवाली समस्या निःसकोच शिक्षक को बताना चाहिए।
- शाला में दिया हुआ गृहकार्य नियमित रूप से करना चाहिए ताकि लेखन क्षमता का विकास हो सके।
- शाला में शिक्षक की गैरहाजरी में खाली समय में किसी भी कठिन शब्दों का लेखन करना चाहिए।
- भिन्न-भिन्न प्रकार की स्पर्धाओं में हिस्सा लेना चाहिए। ताकि लेखन क्षमता का विकास हो सकें।

5.5.2 प्राथमिक शाला के शिक्षको को सुझाव

- शिक्षको को हिन्दी भाषा पठाते समय पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु पर नहीं बल्कि भाषा के कौशलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए। जिससे उसके अंतर्गत आनेवाले लेखन-कौशल तथा क्षमता का विकास हों।
- शिक्षको को नियमित रूप से गृहकार्य की जाँच करना चाहिए।
- कक्षा में कठिन शब्दों का लेखन कराना चाहिए तथा नियमित लेखन कराकर हस्तलेखन को सुंदर बनाना चाहिए।
- वाचन कार्य कराकर भी लेखन की क्षमता को बढ़ाना चाहिए।
- लेखन से संबंधित गृहकार्य देना चाहिए तथा प्रत्येक विद्यार्थी की उत्तर पुस्तिका में वर्तनी की अशुद्धियों की जाँच करनी चाहिए तथा अंकों को शब्दों में लिखवाकर अभ्यास करवाना चाहिए।
- ऐसे क्रियाकलापों का आयोजन करना चाहिए जिससे छात्र अपनी लेखन संबंधी त्रुटियों को स्वयं दूर करने का प्रयास करें।
- कक्षा स्तर पर हिन्दी शुद्ध लेखन पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

- शिक्षको को बच्चों की हिन्दी भाषा उपलब्धि हेतु बच्चों से हिन्दी में सम्प्रेषण करना चाहिए।
- शाला में निबंध लेखन, अनुलेखन एवं चित्र बताकर मौलिक लेखन करवाना चाहिए।

5.6 भावी शोध हेतु सुझाव

- प्रस्तुत शोध विस्तृत न्यादर्श पर किया जाये जिससे परिकल्पनाओं का परीक्षण और अधिक स्पष्ट हो सकें।
- विद्यार्थियों की विभिन्न प्रकार की क्षमताओं में कठिनाईयों का पता लगाकर शिक्षकों द्वारा उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करके अध्ययन करना चाहिए।
- प्रस्तुत शोध शहरी विद्यालयीन विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता हैं जिसके अंतर्गत शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की क्षमता संबंधी तुलना का अध्ययन किया जा सकता हैं और क्षमता विकास का पता लगाया जा सकता हैं।
- इसी प्रकार के शोध कार्य द्वारा भाषा में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं योग्यताओं को बढ़ाया जा सकता हैं।

5.7 शैक्षिक उपयोग

- प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सीखने की तीव्रता होती हैं। अतः उसकी जन्मजात क्षमता को बढ़ाया जा सकता हैं।
- बच्चें भाषा की जटिल संरचना को सहज रूप में सीखते है, इसलिए इस दृष्टि से उनका मूल्यांकन उनकी अवस्था के अनुरूप होना चाहिए।
- भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं इसलिए विद्यार्थियों की भाषा में दक्षता का प्रभाव उसके अन्य विषयों पर भी पडता हैं। अतः भाषा के अध्यापन पर ही बालकों की सफलता निर्भर हैं।

- अशिक्षित परिवार के बालकों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए क्योंकि इन परिवारों में ही उनकी प्रतिभाएँ जन्म लेती हैं। आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े हुए परिवारों के बच्चों में भी सृजन की अनेक संभावनाएँ हैं। अतः ऐसी परिस्थितियों में बालकों में लेखन क्षमता के विकास हेतु सहदयता एवं धैर्य व निष्ठा से कार्य करने की आवश्यकता हैं।

- अशिक्षित परिवेशवाले परिवारों में लेखन के महत्व का ज्ञान कम होने के कारण वह अपने बच्चों को लेखन के प्रति प्रेरित नहीं कर पाते। अतः इस स्थिति में शैक्षिक संतुलन के लिए बच्चों के माता-पिता को जानकरी देना चाहिए तथा इस प्रकार ध्यान देना चाहिए कि उन बालको की प्रतिभा पर अशिक्षित वातावरण का प्रभाव कम से कम हो सकें क्योंकि ऐसे माता-पिता के बच्चें विद्यालय पर ही निर्भर होते हैं।

- लेखन एक ऐसा उपकरण का साधन हैं जिसमें सम्पूर्ण मानवता के बन्धुत्व के भाव विकसित किए जा सकते हैं। अतः भाषा शिक्षण में माता-पिता को बच्चें के लेखन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भाषा सशक्त भूमिका निभा सकती है। अतः बालकों में लेखन की क्षमता का विकास अनिवार्य दायित्व माना जाना चाहिए।